Pension to 60,000 MTNL Employees of Mumbai and Delhi

SHRI BHARAT KUMAR BHAVANISHANKAR RAUT (Maharashtra): Mr. Deputy Chairman, Sir, I wish to give voice to the long-pending grievance of 34,000 employees of MTNL working in Delhi and Mumbai. Sir, these employees are up in arms. They are agitating and protesting for fulfilment of their demand which is their natural right. If getting Government pension is a right, then, these 34,000 employees have been deprived of their natural right; their democratic right for the last so many years. It is not that they have been just sitting with folded hands. This story goes way back to 1986 when MTNL was launched with a great fanfare. At that time, all these employees who were working for DoT were transferred on deputation to MTNL in Mumbai and Delhi. It is not that it was their choice. By force and obligation, all these employees were shifted to MTNL and from then on they have been deprived of their right to get Government pension. After that, those employees were absorbed in the MTNL. The assurance given by the Government was that all the rights and benefits of being a Government servant would be transferred to these employees working in PSUs also. But it has not happened. The employees have been demanding for this. In 2002, the then Minister for Communications, Mr. Pramod Mahajan, held a meeting and he assured that Government pension will be given to the MTNL employees. But, nothing happened. After that, the leader of my Party, Shri Manohar Joshi, who was the Speaker of the Lok Sabha, took initiative and held meeting. Again, an assurance was given that Government pension and family pension will be given. Nothing happened after that. Sir, the employees kept agitating, and now in December, again, a delegation of these employees met the Minister, Mr. Raja. He assured them that the required notification will be issued. Sir, 34,000 employees are waiting for justice. Today, outside this House, in Delhi, 15,000 employees have assembled to demand for Government pension. We say that we are in the era of communication. Telephone has been our lifeline. And, particularly, for people living in Mumbai and Delhi, it is a right. Why are you not allowing their right to life? I think the Minister should immediately take it up and do justice to them. Thank you,

Incidents of dog bites in Delhi and non-availability of anti-rabies vaccine

श्री शाहिद सिदीकी: (उत्तर प्रदेश): धन्यवाद महोदय, आज हमारे मुल्क के गावों में, गालियों में, बाज़ारों में, शहरों में और खास तौर से बड़े शहरों में एक आतंक फैला हुआ है। वह आंतक बहुत खतरनाक है और आम आदमी को इस आंतक का सामना करना पड़ रहा है। वह आतंक है—जो लाखों की तादात में कृत्ते गलियों में घूम रहे हैं। वे आम आदमी पर इस तरह से हमला करते हैं। वह आम आदमी सड़कों पर निकलता है, वह गाडियों में नहीं घूम सकता। उससे भी बडी दिक्कत यह है कि वैक्सीन अस्पतालों में अवेलेबल नहीं है। आज ही के अखबार में यह खबर है कि एक बच्चे को कृत्ते ने काट लिया। उसे 6 अस्पालों में ले गए। हर जगह यह कहा गया कि हमारे पास खबर है कि एक बच्चे को कृत्ते ने काट लिया। उसे 6 अस्पतालों में ले गए। हर जगह यह कहा गया है कि हमारे पास वैक्सीन नहीं है और आप हमारे एरिया में नहीं आते। जैसे पुलिस स्टेशन का एरिया होता है उसी तरह अस्पतालों का एरिया कर दिया गया है। आपको मालूम है कि अगर 24 घंटे के अंदर-अदंर वेक्सीन नहीं लगे तो आदमी मारा जाएगा। ज्यादातर औरते और बच्चे ही कृतों के काटने का शिकार हो रहे हैं। यह बंगलीर में बहुत ही बड़ा मसला है, मुम्बई में शायद इतना नहीं होगा, लेकिन दिल्ली में, बंगलौर में, छोटे-छोटे कस्बों में इनका एक आतंक फैसला हुआ है। इस कारण सुबह को बुढे लोग वॉक पर नहीं जा सकते। वॉक करने जाते हैं तो कृत्ते उन पर हमला कर देते हैं। तो मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि एक तो आप वेक्सी न का इंतजाम कीजिए और यह जो वेक्सीनेशन का एरिया बांट दिया गया है, यह बड़ा खतरनाक है, क्योंकि इसमें आपको टाइम बाउंड वेक्सीनेशन चाहिए होता है। आज के हिन्दुस्तान टाइम्स में इसकी खबर है कि अस्पताल में नहीं होने की वजह से एक बच्चे को वेक्सीन नहीं मिला। यह मसला आज का नहीं है, मुसलसल में देख रहा हूँ, जब हम अपनी कंस्टीट्यूंसी में जाते हैं तो हमे वहां लोगों से यह शिकायत मिलती है। यह मसला बहुत छोटा है, इसलिए यह मसला इतने बड़े हाउस में उठाने का नहीं है। लेकिन आम आदमी इससे बहुत ज्यादा प्रभावित

है। इसलिए मैं आपसे कहना चाहता हूं कि सरकार, हैल्थ मिनिस्ट्री इस मसले के ऊपर ध्यान दे। एक तो वेक्सीन का इंतजाम हो और दूसरे, इन कुत्तों का कुछ इलाज किया जाए। मैं हाथ जोड़कर उनसे कहना चाहता हूं जो इन कुत्तों से प्यार करते हैं, वे उनको पालें, घरों में पालें, उनके लिए हेयर ड्रेसर रखें, उनके लिए फैशन डिजाइनर रखें, उनके लिए परफ्यूम बनवाएं, वह सब कुछ होना चाहिए। लेकिन उसके साथ हजारों की तादाद में, सर, दिल्ली में ही सिर्फ ढाई लाख आवारा कुत्ते हैं। अगर इन कुत्तों की नसबंदी नहीं होगी, अगर इन कुत्तों का इलाज नहीं होगा तो स्थिति खराब हो सकती है।(व्यवधान).... बिल्कुल करवाई जाए, बहुत जरूरी है और हो रही है, लेकिन जिस तरह से होनी चाहिए, उस तरह से नहीं हो रही है।

श्री रिव शंकर प्रसाद (बिहार): आप कुत्तों को आतंकवादी क्यों कह रहे हैं?

श्री शाहिद सिदीकी: वे आतंकवादी नहीं है, उनका आतंक है। उनका आतंक हम सबको प्रभावित किए हुए है। इसलिए में आम आदमी को पीड़ा आपके सामने रख रहा हूं और मैं चाहता हूं कि इसमें पूरा हाउस मेरा साथ दे।

श्री बनवारी लाल कंछल: (उत्तर प्रदेश): मैं इससे अपने आपको सम्बद्घ करता हूं। श्री वीर पाल सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): मैं भी एसोसिएट करता हं।

माननीय सदस्यः हम भी इससे सहमत है।

ارشری شابد صدیقی (اتر پردیش): دھنیواد مہودے، آج ہمارے ملک کے گاؤں میں، بازاروں میں، شہردوں میں اور خاص طور سے بڑے شہروں میں ایک آننک پھیلا ، بوا ہے۔ وہ آتنک بہت خطرناک ہے اور عام آدمی کو اس آتنک کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے۔ وہ آتنک ہے، جو لاکھوں کی تعداد میں کتے گلیوں میں گھوم رہے ہیں، وہ عام آدمی پر اس طرح سے حملہ کرتے ہیں۔ وہ عام آدمی سڑکوں پر نکلتا ہیں، وہ گاڑیوں میں نہیں گھوم سکتا۔ اس سے بھی بڑی دقت یہ ہے کہ ویکسین اسپتالوں میں اویلیبل نہیں ہے۔ آج ہی کے اخبار میں یہ خبر ہے کہ ایک بچے کو کتے نے کاٹ لیا۔ اسے جھہ اسپتالوں میں لے گئے۔ ہر جگہ یہ کہا گیا کہ ہمارے پاس کاٹ لیا۔ اسے جھہ اسپتالوں میں لے گئے۔ ہر جگہ یہ کہا گیا کہ ہمارے پاس موتا ھے اسی طرح اسپتالوں کا ایریا کردیاگیا ھے۔ آپ کو معلوم ھے کہ اگر 24 ھوتا ھے اسی طرح اسپتالوں کا ایریا کردیاگیا ھے۔ آپ کو معلوم ھے کہ اگر 24 گھنٹے کے اندر اندر ویکسین نہیں لگے تو ادمی مارا جانے گا۔ زیادہ تر عورتیں اور بچے ہی کتوں کے کاٹنے کا شکار ہورہے ہیں۔ یہ بنگلور میں بہت ہی بڑا مسئلہ ہے، بچے ہی کتوں کے کاٹنے کا شکار ہورہے ہیں۔ یہ بنگلور میں بہت ہی بڑا مسئلہ ہے،

^{†[]}Transliteration in Urdu Script.

معيني مين شايد اندا بنجي ۽ گان ٿنگ اندلي جو ۽ طاگور اموره جهوڻير ڇهوڻير قصوري میں ان کا ایک انتک پہیلا ہوائیے۔ اس کارن صبح کو ہوڑھے لوگ واک پرنہیر جاسكت، والك كرائم جائم بين تو كائم إن ير حمله كرديائم بين، تو مين سركار سيم کیفا جایئا ہوں کہ ایک تو آپ ویکسین کا انتظام کیجنے اور یہ جو ویکسینیٹن کا اوریا بانٹ دیا گیا ہے ، یہ یا ا عطریاتک ہے ، کواں کہ اس میں آپ کو فاتم باونڈ و یکسیلیشن جانشہ ہوتا ہے۔ اج کے ہندستان ثانسی میں اس کی خبر ہے کہ اسپتال میں نہیں ہونے کی رجه سے ایک بچے کو ویکنون نہیں ملا یہ مسئلہ آج کا نہیں ہے، مسلمل میں دیکھہ راہا ہوں، جب ہرایتی کامٹی ٹیونسی میں جانسر میں تو ہمیں وہاں لوگوں سسرا یہ شکایت مثنی ہے۔ یہ مسئلہ بہت چہوڑا ہے، اس لتے یہ مسئلہ انتہے بڑے مازس میں اللهائس کا نویں ہے۔ لیکن غام اُنمی اس سے بہت زیادہ پر بھاوت ہے۔ اس لئے میں آپ مسر كهذا جاهلا عرب كه سريكة مجارت بدين من اس مسالح، كير الويور دهيان دي. ايك تو ويكسين كا انتظام يو اور دوسوري، ان كانون كا كچه، علاج كيا جانس، مين باته، جوڙ کر ان سیر کیدا جایا ہوں جو ان کاوں سیر بیار کرشے ہیں، وہ ان کو یابی، گھروں میں بائیں، ان کیے انہے باتو شریس رکھوں، ان کیے نتے ا**یشن گڑائٹر رکھوں، ان کے** السر بر ابوه بنواتين، وه سب كجهه بوطا جابلس ليكن أس كسر ساله، يز ارون كي تعداد میں۔ سر دیلی میں ہی صدرف ڈھائی لاکھہ اوارہ کئے ہیں۔ اگر ان کٹوں کی نسینڈی نہیں پوگئے، اگر ان کٹوں کا علاج نہیں ہوگا تو آسٹھٹی خواب ہوسکئی ہے

سمداخات سے بالگل گلزوائی جائسر، بہت ضروری سے اور بوریں سے، لیکن جس طوح مبير يوفا جايلسره ابن طوح سير نبين يوويي بسر-

شری روی فیلکر پرساد: آب کارن کے انتک وادی کیوں کیہ رہے ہیں؟

شران شابد صحیقی : وه آنتک و ادی نہیں ہیں، ان کا آنتک ہم سب کو ہر پہلوٹ کانے ہونے ہے۔ اس لئے میں عام ادمی کی پیڑا آپ کے سامنے رکھہ رہا ہوں اور میں چاپٹا بوں کہ پور ا پکوس میں، ساتھ سے، کر۔

^{†[}Translitenition in Urdu Scrip]